

अमर उजाला

लकवा बना रहा युवाओं को लाचार

नई दिल्ली। चालीस वर्षीय रमेश अरोड़ा अपने ऑफिस में बैठे हुए थे। अचानक ही उन्हें घबराहट महसूस हुई और वह पसीने से तरबतर हो गए। मदद के लिए बाहर निकले लेकिन आवाज साफ नहीं निकल रही थी और शरीर का दायं हिस्सा भी सुन्न होने लगा।

इसकी चपेट में आने वालों में 30 प्रतिशत लोग 45 वर्ष से कम उम्र के होते हैं

महिलाओं के मुकाबले पुरुषों की संख्या 19 प्रतिशत ज्यादा होती है

अस्पताल ले जाने पर पता लगा कि ब्रेन स्ट्रोक की वजह से उनके शरीर दायें हिस्से में पैरालिसिस (लकवा) हो गया है। इस तरह के

हादसे के शिकार अकेले रमेश अरोड़ा ही नहीं बल्कि उनके जैसे हजारों लोग हैं जो ब्रेन स्ट्रोक के शिकार होते हैं।

वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइजेशन की रिपोर्ट के मुताबिक भारत में प्रति एक लाख की आबादी पर लगभग 268 लोगों को दिमागी दौरा पड़ता है जिनमें से 45 प्रतिशत लोग स्थायी अपंगता के शिकार हो जाते हैं। स्ट्रोक की वजह से हर रोज 200 से भी ज्यादा लोग जान गंवा रहे हैं। रिपोर्ट के मुताबिक कुछ साल पहले पैरालिसिस बुढ़ापे की बीमारी मानी जाती थी मगर अब इसकी चपेट में आने वालों में 30 प्रतिशत लोग 45 वर्ष से कम उम्र के होते हैं और इनमें महिलाओं के मुकाबले पुरुषों की संख्या 19 प्रतिशत ज्यादा होती है। मैक्स अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. राजशेखर रेड्डी का कहना है कि धमनी

के स्ट्राके से ज्यादा खतरनाक नसों का स्ट्रोक होता है। इसकी चपेट में ज्यादातर युवा व बच्चे आ रहे हैं। अपोलो अस्पताल के सीनियर न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. पी.एन. रंजन कहते हैं कि जीवनशैली व खानपान में आए बदलाव और स्ट्रेस की वजह से ये दिक्कतें बढ़ रही हैं, जिनसे बचाव के लिए जागरूकता बहुत जरूरी है। एम्स की न्यूरोलॉजी विभाग की प्रो. एम.वी पद्मा का कहना है कि रक्त आपूर्ति करने वाली नली के फटने से दिमाग को ऑक्सीजन नहीं मिल पाती है और उसकी कोशिकाएं मरने लगती हैं। ऐसे में यदि मरीज को चिकित्सीय सहायता नहीं उपलब्ध कराई जाएगी तो मरीज का जीवित रहना संभव नहीं होता है। उनका कहना है कि देश में पारसी समुदाय व उत्तर पूर्व राज्यों में 62 फीसदी लोगों को ब्रेन स्ट्रोक होता है।

विश्व स्ट्रोक दिवस आज

- प्रत्येक साल एक लाख की आबादी में लगभग 268 लोगों को दिमागी दौरा पड़ता है
- एक लाख की आबादी में 73 लोग स्ट्रोक के शिकार
- स्ट्रोक के शिकार 70 फीसदी मरीज बोलने की क्षमता खोते हैं

कारण

- जीवनशैली में बदलाव
- मधुमेह ■ वंशानुगत
- धूम्रपान ■ तनाव
- मोटापा